

गणित
II



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

वर्ष 2018 24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी (विश्लिष्ट)	0 0 1	हिन्दी
स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें		
0552150		
परीक्षार्थी का रोल नम्बर		
8 1 6 3 2 9 8 8 1		
शब्दों में		
दो आठ एक छ. तीन दो नौ आठ अठ		
एक एक दो चार तीन नौ पांच छ. आठ		

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं परीक्षक द्वारा भरा जावे

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 02 शब्दों में 6	
ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 5	
ग :- परीक्षा का दिनांक 6/12/18	
परीक्षा के नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा	
केन्द्राध्यक्ष वी.टी.पी. जमा विद्यालय	
पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Narayan Shrivastava	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

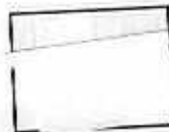
प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई हो। क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है। निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं। उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा : परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	
Virendra Singh Rathore (V.A.) Govt. H.S. Vijaygram V.No. 13583 Mob. 9406547309	G.H.S. Amravati-Ghat Reg No. 12220 Mob. 8085030689

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।			
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।			
प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक	अंकों में
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			
कुल			
			प्राप्तांक अंक

2



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 2 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (1) का उत्तर

उत्तर -

- (अ) कृष्ण की लीन ।
- (ब) (i) भय में
- (स) (ii) लाल मणि
- (द) (iii) पत्र
- (इ) (iv) 31

B
S
E

प्रश्न क्र० (2) का उत्तर

उत्तर -

- (अ) धरती
- (ब) हाठा अंगुर
- (स) सरस्वती
- (द) मातृभाषा
- (इ) प्रबन्ध काव्य

3



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 3 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (3) का उत्तर

उत्तर

(1) सत्य

(2) असत्य

(3) सत्य

(4) असत्य

(5) सत्य

प्रश्न क्र. (4) का उत्तर

(अ) दश गुरु

(ब) सकार

(स) राजरानी देवी

(द) तीन

(इ) छप्पस छंद

4



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 4 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (5) का उत्तर

संख्या 'अ'

संख्या 'ब'

(अ) मीरा के आराध्य

श्रीकृष्ण

(ब) वापसी

अर्थात् प्रियंवदा

(स) कंस आतंकित था

देवकी का रघोमातीत रूप

(द) गेय युक्तक

मीरा व दावली

(इ) माता - पिता

दुग्ध समाप्त

B
S
E

5



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 5 के अंक

कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (6) का उत्तर

माव में पानी भर जाने पर सयानों का कर्तव्य है कि उस पानी को दीनों हाथों से बाहर निकाल देना चाहिए अन्यथा माव उसी प्रकार डूब जाएगी जिस प्रकार घर में बड़ा हुआ धन यदि दान आदि कार्यों में खर्च न किया जाये तो वह अपने साथ-साथ घर के स्वामी को भी लू डूबता है।

प्रश्न क्र० (7) का उत्तर (अथवा)

अनेकता में रहता हमारे देश की विशीषता है। यहाँ अनेक रंग-रूप, भाषा - भाषी के लोग रहते हैं। यदि इनमें एकता होती है तो समाज न तो लड़ाई - झगड़े होते हैं व और न ही समाज में छुराईयाँ फैलती हैं। अतः एकता में शांति है जो इन्हें आपस में बाँधे रखती है इसलिए कठि वीरेन्द्र मिश्र ने देशवासियों के मिल-जुलकर रहने पर अत्याधिक बल दिया है।

6



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 6 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (8) का उत्तर

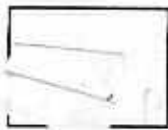
कवि हैं 'हारी सुहागिन',
संस्कृति के वे हैं तो विवाहित स्त्री के
लिए किया है लेकिन प्रकृति की ओर
भी संकेत है।

B
S
E

प्रश्न क्र० (9) का उत्तर

माँ सरस्वती की वन्दना
देव गण, ऋषि गण, भूत, अविश्य, वर्तमान
की जानने वाले उनके पति ब्रह्मा,
शिव तथा कार्तिकेय करते हैं।

7



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 7 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र० (10) का उत्तर

कैवट कहता है कि है प्रभु
आपके चरों की धूल का प्रभाव बहुत
विशाल है। मेरी नाव तो लकड़ी की है
और पत्थर से बहुत कमजोर है। कैवट
की इसी भक्ति भरी सीरी वाली को सुनकर
प्रभु राम को हँसी आ गई।

प्रश्न क्र० (11) का उत्तर (अथवा)

घर खुलते ही लैरक को
लाने लगा था कि ताले के खुलने
के साथ ही उसके अन्दर भी कुछ
खुलना जा रहा है। उसकी यादें
जा जा रही हैं। उसके अस्मित
के वचन की स्मृतियों जागृत हो
लगी।

8



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 8 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (12) का उत्तर

भय और आशंका में निम्न अंतर है-

B
S
E

भय	आशंका
(1) भय में आने वाली विपत्ति का पूर्ण निश्चय रहता है।	(1) आशंका में विपत्ति की आशंका रहती है।
(2) भय में घबराहट अधिक रहती है।	(2) आशंका में घबराहट कम होती है।
(3) भय अधिक समय तक नहीं रहता है।	(3) आशंका अधिक समय तक रहती है।

9



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 9 के अंक

कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 13 का उत्तर

भारत लोकी के अनुसार अच्छे अध्याप
की दो विशेषताएँ निम्न हैं -

(1) अच्छे अध्याप अध्यापता करने से
मना नहीं करते।

(2) अच्छे अध्याप न तो बनाए जाते हैं
और न ही चुने जाते हैं वे तो
जन्म जात पैदा होते हैं।

(3) अच्छे अध्याप हमेशा प्रमुख वक्ता
की बात से असहमत रहते हैं।

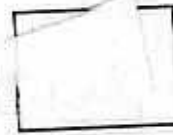
10



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 10 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (14) का उत्तर

उत्तराखण्ड के प्राकृतिक दृश्यों के
 सामने न तो काश्मीर के दृश्य और
 न ही स्विट्जरलैंड के दृश्य उभरते हैं।
 काश्मीर के कुछ दृश्य यहाँ से अटके
 हो सकते हैं परन्तु यहाँ के दृश्यों
 में जो धार्मिक भावना दृष्टि गोचर होती
 है वह अन्यत्र कहीं नहीं इसलिये
 उत्तराखण्ड के प्राकृतिक दृश्य श्रद्धालुओं
 को आकर्षित करते हैं।

B
S
E

प्रश्न क्र० (15) का उत्तर

उत्तर :

(i) उसने मुझे कुछ नहीं कहा।

(ii) अवदीय

11



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 11 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र 16 का उत्तर

हास्य रस :-

जब सहृदय के हृदय में स्थित हास नासक स्थायी भाव का संयोग विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से होता है तब वही हास्य रस की उत्पत्ति होती है।

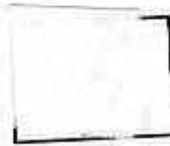
उदा०

“वह खून कहीं किस मतलब का,
जिसमें उछाल का नाम नहीं,
वह खून कहीं किस मतलब का,
जो आ सके देहा के काम नहीं”

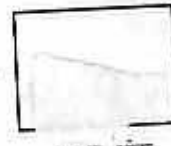
12



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 12 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 17 का उत्तर (अथवा)

गौरीश शंकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं -

(1) सरल एवं सादा जीवन :-

गौरीश शंकर जी का पहनावा भी सरल एवं सादा था परन्तु उनके विचार उच्च कौटि के थे।

(2) सकल संपादक एवं संचालक :-

गौरीश जी ने 'प्रताप' पत्रिका का सकल संचालन तथा संपादन किया है। वह भारतवर्ष की एक महत्वपूर्ण पत्रिका बन गई थी।

(3) कुशल राजनीतिज्ञ :-

गौरीश जी के राजनीतिक जीवन को प्रभाव है। उन्होंने वहाँ अथर्व कानपुर में एक चुनाव भारी मतों से एक हजीवति को हराया था।

B
S
E



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 13 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

(क) साहित्यकार एवं देशभक्त :-

मंगेजी अंदर
 मैं एक सफल साहित्यकार भी थी तथा
 व कान्ति कारियों की सहायता कर देखा
 की अंग्रेजी की जुलूसी मैं मुक्त
 भी करना चाहते थी।

प्रश्न क्रमांक (क) का उत्तर (अथवा)

राजभाषा :-

राजकीय कामकाज में प्रयोग
 की जाने वाली भाषा को राजभाषा
 कहते हैं।

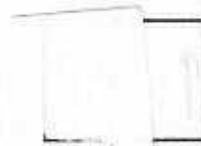
अंग्रेजी में इसे "ऑफिशियल
 लैंग्वेज" कहते हैं। हिन्दी सात राज्यों की
 राजभाषा है जबकि सराठी महाराष्ट्र
 की तथा तमिल तमिलनाडु की राजभाषा
 हैं।

राजभाषा की विशेषताएँ :-

राजभाषा की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं -

(1) यह सरकारी कामकाज की भाषा है।

14



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 14 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

2) राजभाषा का दर्जा मिलने पर उस भाषा का महत्व बढ़ जाता है।

प्रश्न क्र० (19) का उत्तर

रीला छंद :-

इस छंद में चार चरों होते हैं। प्रत्येक चर में 11-13 की यति से 24 मात्राएँ होती हैं। यह एक सम मात्रिक छंद है।

उदा०

जन्म में

“मीलान्वर परिधान हरित पट पर सुन्दर है
सूर्य चन्द्र युग सुकुट मिरवला रत्नाकर है”

नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तोरे मण्डल हैं।
वन्दि जन रवण वृन्द शीघ्र फल सिंहासन हैं।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 15 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 20 का उत्तर

रिपोर्टजि :

रिपोर्टजि फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। अंग्रेजी शब्द रिपोर्ट से इसका निकट का संबंध है। रिपोर्ट समाचार पत्र के लिए लिखी जाती है। रिपोर्ट में प्रायः साहित्यिक तत्व नहीं होते हैं। रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को ही रिपोर्टजि कहते हैं। रिपोर्टजि का विषय कभी कल्पित नहीं होता है।

ज. धर्मवीर भारती एक रिपोर्टजि लेखक हैं जिन्होंने 'सुहृद पात्रा' की रिपोर्टजि लिखी हैं।

रिपोर्टजि की विशेषताएँ :-

रिपोर्टजि की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-

(1) रिपोर्टजि सत्य एवं वास्तविक घटनाओं पर आधारित होती है।

(2) रिपोर्टजि लेखक को पत्रकार एवं कथाकार दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है।

योग पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 16 के अंक

=

कुल अंक



प्रश्न क्र.

(3) रिचें रिजो तजि औरवो देरवी छत्ताओ।
पर ही लिख जात है।

प्रश्न क्र 10 (2) का उत्तर

प्रयोगवाद की विशेषताएँ :-

प्रयोगवाद की

दो विशेषताएँ लिखें :-

B
S
E

(1) नवीन उपमाओं का प्रयोग :-

प्रयोगवादी कवियों ने पुराने व उचलित उपमाओं के स्थान पर नवीन उपमाओं का प्रयोग किया है। इनका मानना है कि पुराने उपमाओं सब वासी पड़ गये हैं।

(2) लघु मानवाद की प्रतिष्ठा :-

प्रयोगवादी कवियों ने मानव में लुप्त प्रत्येक वस्तु की कविता का विषय बनाया है और उसे प्रतिष्ठा प्रदान की गई है।

17



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 17 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रयोगवादी कवि

रचना

(1)

अज्ञेय

हरी घास पर
झावा भर

(2)

धर्मवीर भारती

ठंडा लोहा

(3)

भारत छोड़ो आंदोलन

और सख्त मन

प्रश्न क्रमांक (22) का उत्तर

सूरदास

(अ)

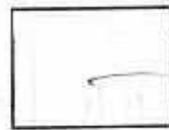
दो रचनाएँ :-

(क) सूरसागर

(ख) साहित्य लहरी



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 18 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

(1) भाव पक्ष :-

सूरदास का भाव पक्ष निम्न
विन्दुओं में स्पष्ट है -

(1) सक्रिय भावना :-

सूरदास कृपा भक्त थे।
उन उन्हीं अपने आराध्य श्रीकृष्ण का
उपाहार बनाकर ही अपनी रचनाओं का
निर्माण किया है।

(2) श्रेष्ठ रस संयोजना :-

उन्हीं अपने
काव्य में रसों का सुन्दर परिपाक किया
है। उन्हीं अपने काव्यों में झंगार, मक्खि
नया वात्सल्य की त्रिवेणी उगहित की है।

(3) अद्वितीय वात्सल्य :-

सूरदास जी वात्सल्य
के दुर्लभ चित्र हैं। उन्हीं वात्सल्य
का कौन - कौन सा है। उनके वात्सल्य
वर्णन जैसा कि हमें आज कभी
नहीं है।

कला पक्ष :-

सूरदास का कला पक्ष निम्न
विन्दुओं में स्पष्ट है -

B
S
E

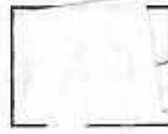
19



+



=



२. २५ पृष्ठ

पृष्ठ 19 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

(1) काँचा :-

3 सूरदास को काँचा लालित्य
उद्यान छल काँचा है। जिसने काँच की
शीका को हिरुणित कर दिया है।

(2) शौली :-

सूर की शौली गैर पद
शौली है। उन्होंने मुक्तक रचना की है
जो गैरता से जारी पड़ी है।

(3) अलंकारिता की सहज साधुति :-

अलंकार
विद्यान वे सूर का उत्तम कौटि का है।
उन्होंने कुल्लूक अलंकारों का प्रयोग किया है।

(4) साहित्य में स्थान :-

सूरदास का हिन्दी
साहित्य में स्थान उत्तम कौटि का है।
वे सकल काल की कुल्लूक सकल भाषा
के प्रवर्तक कवि हैं। उन्होंने वात्सल्य
को प्रकट किया अथवा वे वात्सल्य
रस के जनक हैं वे हिन्दी साहित्य में
सूर के प्रकाशक हैं।

“सूर-सूर तुलसी समी, उडुवान केरा पदास
ठाव के कवि रघीत सम, अह अह करत प्रकाश”

20



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 20 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (23) का उत्तर

रामनारायण उपाध्याय

(अ) दी रचनायें :-

(क) चतुर चिट्ठिया

(ख) कथाओं की सन्तर्कधाराएँ

(ग) हम वी बाबुल वीरे वान
की चिट्ठिया

B
S
E

(ब) भाषा :-

रामनारायण उपाध्याय की भाषा

परिभाषित, प्रौढ़ एवं सुदृढ़ साहित्यिक रचनी
वैली है। गद्य-शान्ति दिखाने वाले हैं

प्रयोग से भी उन्हें नहीं किया गया है।

यद्यपि भाषा संस्कृत लिखित तथा ललित है।

इसी कारण विषय का ठोस प्रभाव

सहज एवं स्वाभाविक है। सुहावरे एवं

लौकीकता के प्रयोग से भाषा में

उदाहृत या गया है। कथन में

सुहावरे एवं लौकीकता का महीन

प्रयत्न किया गया है। नरम शब्दों का

भी वास्तविक है। इनकी भाषा

लौकिक भाषा कहते हैं।

वैली :-

उपाध्याय जी की ललित शैलियाँ



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 21 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

की आप समझाया है -

(1) आत्मव्यंजक शैली :-

उपाध्याय जी ने इसमें कवियों निरवस्था और निरवस्था में आत्मव्यंजक शैली को समझाया है। जिसमें निरवस्था में निरवस्था अनुकूलि अनुकूलि परिलक्षित हो जाती है।

(2) संवाद शैली :-

संस्कारों में इन्होंने संवाद शैली को भी समझाया है। जो कि संबंधों को उभारता और प्रकट करती है।

(3) संक्षेप शैली :-

संक्षेप शैली को उपाध्याय जी ने संक्षेप-पर हो।

साहित्य में स्थान :-

उपाध्याय जी लोक संस्कृति पुराण के रूप में जानें जाते हैं। हिन्दी साहित्य में उपाध्याय जी के कृतित्व को उनके व्यक्तित्व में और भी महान बना दिया है। हिन्दी साहित्य में आपका उत्कृष्ट स्थान सर्वत्र है।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 22 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (24) का उत्तर

किन्ती

कहे हैं।

सन्दर्भ:

प्रसूत गांधी हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वाति' के 'अप' नामक पाठ में अवतरित हैं। जिसके लेखक रामलाल शर्मा हैं। रामचन्द्र शुक्ल भी हैं।

अंक

प्रसंग:

लेखक ने अप के सभी वैज्ञानिक रूप को प्रकट किया है।

व्याख्या:

लेखक कहते हैं कि अप वह है जो हमें गाँव वाले संकट या विपत्ति के कष्ट प्रति होता है। यह एक नयी विचार है। जिसमें व्यक्ति अपने अन्दर उसे बेठा कर उठा रहता है और वह कामों के निष्पादन में सफल हो जाता है।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 23 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

यदि शाय में कौछ आता है तो वह दुरा
के कारण पर आता है।

कार्य सौन्दर्य:-

- (1) शाय मूलक विकार को परिभाषित किया है।
- (2) यह चारवा एक सिद्धित वाक्य है।
- (3) शुद्ध साहित्यिक शब्दी बोली का प्रयोग है।

प्रश्न क्र 25 का उत्तर (अथवा)

कवीर

होय ।

सन्दर्भ:-

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'संगीत' के प्रथम अ 'गीतिकाव्य' के 'समस्तवाणी' पाठ से अवतरित है। इसके कवि 'कवीरदास जी' हैं।

प्रसंग:-

कवि ने उदाहरण द्वारा सत्युक्त की संगति करे को कहा ।

$\square + \square = \square$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 24 के अंक कुल अंक



प्रश्न क्र.

उत्तरव्यापार :

कबीर कहते हैं कि हमें साधु पुरुषों की संगति करना चाहिए क्योंकि सत्पुरुषों की संगति से सम्बन्ध पर चलने लगते हैं। उन्होंने इस कथन को चन्दन और बौस का उदाहरण देते हुये कहा है कि चन्दन की संगति में सड़ी हुई खुशबू देने वाले ही लगते हैं परन्तु बौस का उदाहरण की प्रकृति को नहीं बदलता।

B
S
E

काव्य सौन्दर्य :

- (1) संसार के सत्य को प्रतिपादित किया गया है।
- (2) भाषा सघुक्कड़ी है।
- (3) कथन को उदाहरण द्वारा पुष्टि की गई है।



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठों पर

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय

विषय कोड

परीक्षा का माध्यम

परीक्षा का दिनांक

01 03 18

हिन्दी (विश्विष्ट)

0

0

1

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगाये

परीक्षक का नाम एवं परीक्षा केंद्र क्रमांक की मुद्रा

हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

[Signature]

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

[Signature]

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →



मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ

तक कल प्राप्तोंक

+ =

B
S
E

प्रश्न क्र० (26)

उत्तर

(क) क्षीयक - "मेरी माँ"

(ख) समाज से अलग बनने के
अस्तित्व की कल्पना नहीं की
जा सकती।

(ग) मित्र ऐसा सखा है जो पुराने दोस्त
और सभी के स्थानों की धर्ति
करता है।

प्रश्न क्र० (27) का उत्तर (अथवा)

पृष्ठ के अंकों का योग

81

प्रश्न क्रमांक (२०) का उत्तर (७)

(७)

उत्तर :-

यातायात की बढ़ती समस्या

रूपरेखा :-

- (१) प्रस्तावना
- (२) यातायात के साधन
- (३) यातायात के नियमों का पालन
- (४) यातायात पुलिस का कर्तव्य
- (५) जागरूकता की कमी
- (६) इन्सुरेंस पर कठोर दंड की व्यवस्था
- (७) उपसंहार

“ प्रजातंत्र का आधार है सुव्यवस्थित
 जीवन को सुन्दर बनाना है यातायात का
 अनुशासन ”

www

(3)

उत्तर:

परिचित प्रदूषण : समस्या और निवार

रूपरेखा :-

- (1) प्रस्तावना
- (2) प्रदूषण का अर्थ
- (3) प्रदूषण के प्रकार
 - (i) जल प्रदूषण
 - (ii) वायु प्रदूषण
 - (iii) भूमि प्रदूषण
- (4) समाधान
- (5) उपसंहार

हम अपनी हालत का महसूस नहीं करते और ही सुना है कि जहाँ जहाँ हैं वे दुनिया में कुछ इस तरह छाया है प्रदूषण कि देखकर ही हाल है रान है में

प्रस्तावना :-

प्रदूषण का वर्तमान स्तर बहुत अधिक है। जो एक स्थान पर नहीं बल्कि विश्व में सतत बढ़ता जा रहा है। हमें इसके निवारण के लिए



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय वर्ष 2018

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय

विषय कोड

परीक्षा का माध्यम

परीक्षा का दिनांक

01 03 18

हिन्दी (लिखित)

001

हिन्दी

स्टीकर तौर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें



परीक्षा का सुपाठ्यक्रम केन्द्र प्रमुख की मूद्रा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

[Signature]

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

[Signature]

मुख्य उत्तर पुस्तिका के आत्म पृष्ठ क्रमांक _____ तक कुल प्राप्तांक

+ =

बना लिया है। संसार के अन्त का कारण प्रहृषण बना है सकता है। इसलिए इसका समाधान करना आवश्यक है।

प्रहृषण का अर्थ - प्रहृषण से तात्पर्य है कि हमारे वातावरण से अवांछनीय तत्वों का प्रवेश करना है। ये अवांछनीय तत्व वातावरण को बुरी तरह दूषित तथा गन्दे कर देते हैं। जिसका मानव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मानव एवं प्रकृति का संतुलन बिगड़ने लगता है।

जो मानवता पर बढ़ रहा सतत प्रहृषण और संतुलन अच्युत हो रहा है उसे 'इसदर'।



पृष्ठ के अंकों का योग



(3)

सूचना के प्रकार :-

प्रचारित की सूचना के प्रकार में प्रचारित कर दिया गया है इस कारण सूचना के प्रकार भी कई हैं।
जिनमें से कुछ निम्न हैं -

(1) जल सूचना :-

जल में सवांछनीय तत्वों का मिल जाना जल सूचना कहलाता है। इसका प्रमुख कारण जल स्रोतों के पास सवांछनीय कचरा डालना तथा जल स्रोतों की खुला रखना जिससे कचरा सीधे उनमें उबका करता है।

वातफन में हुआ मनुष्य नहीं जावेगा
जल - वायु सूचना, कृत नहीं जावेगा

इंदिरा गांधी का कथन है कि -

“घरती को केवल इतना छोड़ो कि पीनें उवा सेक इतना मत कुड़े कि वह रौ पड़े”

वायु सूचना :-

वायु क में सवांछनीय तत्वों

विचारना

है। वायु

प्रदूषण कारकों में निकलने वाले
हानिकारक धुएँ तथा बेसावनी, नींद-
कारी के धुएँ में फैला है।

पक्ष धारा के हैं - श्वसन करते हैं प्रदूषण
बंदर धरती के उकार, बच्चे कम हो पक्षधारा।

(iii) शुद्धि प्रदूषण

शुद्धि में अपांछनीय तत्वों
का उपचार करना शुद्धि प्रदूषण कहलाता
है।

समाधान :

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए
करके हो हम प्रकृति एवं पर्यावरण
को उसके मूल रूप में वापस ला
सकते हैं। प्रकृति को प्रदूषण में
बर्ताने के हेतु प्रयास करने रहना
चाहिए।

उपसंहार :

पर्यावरण और मानव का
सह संबंध है। यह संबंध केवल
एक दूसरे के समन्वय में ही
संभव है। हम मानव और प्रकृति
को समन्वय बनाए रखना चाहिए।